ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-6* Issue-2* March- 2021
Innovation The Research Concept

स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों के प्रशिक्षणार्थियों के दुश्चिंता स्तर व मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन

Comparative Study of Anxiety Level and Values of Trainees of Self Financed Colleges

Paper Submission: 05/03/2021, Date of Acceptance: 24/03/2021, Date of Publication: 25/03/2021

अर्पिता सिंह
असिस्टेन्ट प्रोफेसर,
शिक्षा विभाग,
प्रो0एच0एन0मिश्रा कालेज,
ऑफ एजूकेशन,
कानपुर, उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश

मूल्य ऐसी आचरण संहिता या सद्गुण है जिसमें व्यक्ति या मनुष्य की धारणाएं, विश्वास, विचार, मनोवृति, आस्था आदि समाहित है। ये मानव मूल्य एक ओर व्यक्ति के अंतःकरण द्वारा नियंत्रित होते हैं तो दूसरी ओर उसकी संस्कृ ति एवं परंपरा द्वारा क्रमशः निस्सृत एवं परिपोषित होते हैं। मनुष्य के जीवन में मूल्यों का महत्व बहुत अधिक है। उसके जीवन का प्रत्येक कार्य किसी न किसी मूल्य से सम्बन्धित होता है। यह मूल्य वह अपने जीवन के प्रारंभिक वर्षों से ही सीखने लगता है और धीरे–धीरे अपने अन्तर्मन में ग्रहण करने लगता है।

Values are such a code of conduct or a virtue that includes the beliefs, beliefs, thoughts, attitudes, beliefs etc. of a person or person. These human values are governed by the conscience of the individual on the one hand and on the other hand are emanated and nurtured by his culture and tradition respectively. Values are very important in human life. Every act of his life is related to some value. He starts learning this value from the early years of his life and gradually starts imbibing it in his inner self.

मुख्य शब्द : मूल्य, प्रशिक्षणार्थी।
Values, Trainees.

प्रस्तावना

मूल्यों की श्रेष्ठता निर्धारण व आत्मसातीकरण में शिक्षा का बहुत योगदान है क्योंकि छात्र वह बीज है जो अपने अंदर समस्त मूल्यों के विकास को समेटे हुए है और शिक्षा वह परिवेश है जो इस बीज को खाद–पानी देकर उसे विकसित होने का अवसर प्रदान करती है। इन दोनों के योगदान से ही मूल्यों का उद्भव हो सकता है। शिक्षा, समाज तथा वृत्ति तीनों मिलकर यह निर्धारित करते हैं कि अमुक काल में व्यक्ति तथा समाज का कल्याण किन बातों पर ध्यान देने से संभव है। मनुष्य चिंतन द्वारा आत्मनिर्धारण व आत्मसमन्वय कर लक्ष्यों को आदर्शों, विचारों तथा वस्तुओं को साधन के रूप में धारण करता है। पूरी शैक्षिक प्रक्रिया में शिक्षक व शिक्षार्थी ही सामाजिक व जैविक प्राणी है। अतः अध्यापकों हेतु ज्ञान व कौशल में दक्ष होने के साथ ही उच्च मूल्यों का धारक भी होना चाहिए। दुश्चिंता वह मानसिक दशा है जिसमें व्यक्ति बिना किसी वास्तविक आधार के कुछ बुरा घटने हेतु आशंकित होता है। थोड़ी बहुत चिंता हमें अपने लक्ष्य की प्राप्ति या सफलता हेतु आवश्यक भी है परंतु इसकी अधिकता व्यापक रूप से व्यक्ति के पारिवारिक, सामाजिक और आर्थिक जीवन को प्रभावित करने लगती है।

समस्या का चयन वर्तमान भौतिकतावादी युग में रोजगार हेतु उच्च शिक्षा ग्रहण करना प्रत्येक व्यक्ति के लिए आवश्यक हो गया है। इसके फलस्वरूप शिक्षार्थियों की संख्या में वृद्धि हुई। परिणामस्वरूप सरकारीध सहायता प्राप्त शिक्षण संस्थान अपर्याप्त हुए और स्ववित्तपोषित संस्थान प्रभाव में आये। परंतु स्ववित्तपोषित संस्थाओं में विभिन्न शैक्षणिक विसंगतियों एवं दबावों से बी०एड० प्रशिक्षणार्थियों में दुष्चिंतायें दृष्टिगत होती है। इसका प्रभाव उनके मूल्यों को किस प्रकार प्रभावित करता है यह जानने की उत्कंठा ने शोधार्थिनी को इस समस्या के चयन हेतु प्रेरित किया।

शोध उद्देश्य

1. बी०एड० विषय के महिला व पुरुष प्रशिक्षणार्थियों की दुश्चिंता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. बी०एड० विषय के महिला व पुरुष प्रशिक्षणार्थियों के मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. उच्च व निम्न चिंताग्रस्त बी०एड० प्रशिक्षणार्थियों की दुश्चिंता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
4. उच्च एवं निम्न चिंताग्रस्त बी०एड० प्रशिक्षणार्थियों के मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन करना।

शोध परिकल्पना

1. बी०एड० विषय के महिला व पुरुष प्रशिक्षणार्थियों की दुश्चिंता में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।
2. बी०एड० विषय के महिला व पुरुष प्रशिक्षणार्थियों के मूल्यों में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।
3. उच्च व निम्न चिंताग्रस्त बीएड प्रशिक्षणार्थियों की दुश्चिंता में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।
4. उच्च एवं निम्न चिंताग्रस्त बी०एड० प्रशिक्षणार्थियों के मूल्यों में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।

शोध विधि न्यादर्श

समस्या के अध्ययन हेतु कानपुर नगर के स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों से 25 पुरुष व 15 महिला बी०एड० प्रशिक्षणार्थियों का चयन उद्देश्यपरक प्रतिचयन विधि से किया गया।

शोध उपकरण

प्रदत्तों के संकलन हेतु ए०के०पी० सिन्हा व एल०एन०के० सिन्हा निर्मित ''कम्प्रहेन्सिव ऐंग्जाइटी'' परीक्षण तथा आर०के० ओझा द्वारा निर्मित ''मूल्य परीक्षण'' का प्रयोग किया गया है।

सांख्यिकीय विधि

संकलित प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु प्रथम चतुर्थाक (फ1), तृतीय चतुर्थ (फ3), मध्यमान, मानक विचलन व टी–अनुपात की गणना की गयी है।

सारणी संख्या–1

महिला व पुरुष बी०एड० प्रशिक्षणार्थियों की दुश्चिन्ता के अन्तर को दर्शाते मध्यमान, मानक विचलन व टी–अनुपात

बी०एड० प्रशिक्षणार्थी	N	M	S.D.	σD	t–अनुपात
पुरुष	25	20.00	9.33	2.09	1.03*
महिला	15	17.00	8.44		

'0.01 पर असार्थक

सारणी संख्या–1 से स्पष्ट है कि परिगणित टी–मान 1.03 है जो .05 सार्थकता स्तर के लिए अपेक्षित टी–सारणी मान 2.02 से कम है, जो असार्थक है। अतः कहा जा सकता है कि महिला व पुरुष बी०एड० प्रशिक्षणार्थियों की दुश्चिन्ता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

सारणी संख्या 2

महिला व पुरुष बी०एड० प्रशिक्षणार्थियों के मूल्यों में अंतर को दर्शाते मध्यमान, मानक विचलन व टी–अनुपात

मूल्य	छात्राध्यापक		छात्राध्यापिकाएँ		टी–अनुपात
	M	S.D.	M	S.D.	
सैद्धांतिक	43.00	9.17	42.40	10.38	0.81
आर्थिक	46.92	10.58	50.24	11.41	1.50
सामाजिक	36.50	9.91	29.92	8.37	1.99*
राजनैतिक	38.92	10.32	35.05	7.53	2.12*
धार्मिक	36.23	9.16	41.39	9.67	2.72**
धार्मिक	36.61	7.48	40.29	8.17	2.31*

सारणी संख्या–2 से स्पष्ट है कि सैद्धान्तिक एवं आर्थिक मूल्य का परिगणित टी–मान क्रमशः 0.81 एवं 1. 50 है जो .05 स्तर पर सार्थकता हेतु निर्धारित टी–मान 1.68 से कम है जो असार्थक है। अतः कहा जा सकता है कि महिला व पुरुष बी०एड० प्रशिक्षणार्थियों के आर्थिक एवं सैद्धान्तिक मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

सामाजिक, राजनैतिक व सौन्दर्यात्मक मूल्य हेतु परिगणित टी–मान क्रमशः 1. 99, 2.12 व 2.31 है जो .05 सार्थकता स्तर हेतु अपेक्षित टी–मान 1.88 से अधिक है जबकि .01 सार्थकता स्तर हेतु अपेक्षित टी–मान 2.42 से कम है। अतः .05 स्तर पर सार्थक है। धार्मिक मूल्य हेतु परिगणित टी–मान 2.72 है जो . 01 सार्थकता स्तर के लिए निर्धारित मान 2.42 से अधिक है जो सार्थक है। अतः कहा जा सकता है कि महिला व पुरुष बी०एड० प्रशिक्षणार्थियों के आर्थिक एवं सैद्धान्तिक मूल्यों में तो कोई सार्थक अन्तर नहीं है जबकि सामाजिक, राजनैतिक, सौन्दर्यात्मक एवं धार्मिक मूल्यों में सार्थक अंतर है।

सारणी संख्या 3

उच्च व निम्न चिंताग्रस्त पुरुष बी०एड० प्रशिक्षणार्थियों के मूल्यों में अंतर को दर्शाते मध्यमान, मानक विचलन व टी–अनुपात

पुरुष बी०एड० प्रशिक्षणार्थी	N	M	S.D.	D	टी–अनुपात
उच्च चिंताग्रस्त	7	27.92	8.37	4.50	3.14*

निम्न चिंताग्रस्त	**9**	**42.02**	**8.17**		

सारणी संख्या 3 से स्पष्ट है कि परिगणित मान 3.14 है, जो 0.01 स्तर के लिए सारणी टी–मान 2.98 से अधिक है जो सार्थक अंतर को व्यक्त कर रहा है। अतः कहा जा सकता है कि उच्च एवं निम्न चिंताग्रस्त पुरुष बी०एड० प्रशिक्षणार्थियों के मूल्यों में अंतर है।

सारणी संख्या 4

उच्च व निम्न चिंताग्रस्त महिला बी०एड० प्रशिक्षणार्थियों के मूल्यों में अंतर को दर्शाते मध्यमान, मानक विचलन व टी–अनुपात

महिला बी०एड० प्रशिक्षणार्थी	N	M	S.D.	D	टी–अनुपात
उच्च चिंताग्रस्त	3	32.23	7.16	7.08	2.63*
निम्न चिंताग्रस्त	4	50.92	8.58		

निष्कर्ष

बी०एड० प्रशिक्षणार्थियों में दुश्चिंता समान पायी गयी है।

1. छात्राध्यापकों एवं छात्राध्यापिकाओं के सैद्धांतिक एवं आर्थिक मूल्य समान पाए गए हैं जबकि राजनैतिक एवं सामाजिक मूल्य छात्राध्यापकों में छात्राध्यापिकाओं से अधिक तथा धार्मिक एवं सौंदर्यात्मक मूल्य छात्राध्यापिकाओं में छात्राध्यापकों की अपेक्षा अधिक पाये गये हैं।
2. छात्राध्यापकों एवं छात्राध्यापिकाओं के मूल्यों को दुश्चिंता प्रभावित करती है। उच्च चिंताग्रस्त छात्राध्यापकों एवं छात्राध्यापिकाओं की अपेक्षा निम्न चिंताग्रस्त छात्राध्यापकों एवं छात्राध्यापिकाओं के मूल्य अभिविन्यास अधिक पाये गये हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *गुप्ता, एस०पी० (2004), उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद*
2. *पाण्डेय, कल्पलता (1985), मैन्युअल फॉर एकेडमिक एंग्जाइटी, रूपा साइको सेंटर, वाराणसी*
3. *पाण्डेय, राजेश कुमार (2006), शैक्षणिक चिंता के संदर्भ में संवेगात्मक बुद्धि का अध्ययन, जर्नल ऑफ एजुकेशनल स्टडीज, वॉल्यूम–4*
4. *पाण्डेय, आर०एस० व के०एस० (2003), मूल्य शिक्षण, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा*
5. *प्रो० रुहेला एस०पी० (2012), विकासोन्मुख भारतीय समाज में शिक्षक तथा शिक्षा, अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा*
6. *डॉ० पाण्डेय रामशकल, डॉ० मिश्रा करुणाशंकर (2005), मूल्य शिक्षण, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा*
7. *Chakarsabonty Mohit (2003), Value Education Changing Perspective, Kanishka Publishers, New Delhi*
8. *Vivekananda Swami (2011), Education for Character Vivekananda Institute of Human Excellence Ramakrishna Math, Domalguda, Hyderabad*
9. *Gupta N.L.(200), Human Values in Education, Concept Publishing Company, New Delhi*